MSK- 004

परास्नातक कार्यक्रम
एम.ए. संस्कृत ऑनलाइन कार्यक्रम
(MSKOL)

सत्रीय कार्य

जुलाई 2025 एवं जनवरी 2026 सत्रों के लिए

स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध

पाठ्यक्रम – आधुनिक संस्कृत साहित्य और साहित्यशास्त्र

पाठ्यक्रम कोड –**MSK- 004**

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

परास्नातक कार्यक्रम

एम.ए संस्कृत ऑनलाइन कार्यक्रम (MSKOL)

MSK-004 आधुनिक संस्कृत साहित्य और साहित्यशास्त्र

स्नातकोत्तर उत्तरार्द्ध

सत्रीय कार्य– जुलाई 2025 एवं जनवरी 2026 सत्रों के लिए

पाठ्यक्रम कोड : MSK-004/2025&26

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनांक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढगं से व्यवस्थित कीजिए।

2. अभ्यास : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए। यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो।

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. प्रस्तुति : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ

जुलाई 2025 सत्र के लिए 31 मार्च 2026

जनवरी 2026 सत्र के लिए 30 सितंबर 2026

सत्रीय कार्य

जुलाई 2025 एवं जनवरी 2026 सत्रों के लिए

पाठ्यक्रम शीर्षक–आधुनिक संस्कृत साहित्य और साहित्यशास्त्र

पाठ्यक्रम कोड – MSK 004

प्र. 1. निम्न लिखित में से किन्हीं छः (06) प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

06×10=60

क. 20वीं शताब्दी के प्रमुख चार आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालिए।

ख. संस्कृत महाकाव्य जगत में प्रो. राजेन्द्र मिश्र के योगदान को लिखिए ।

ग. आधुनिक संस्कृत काव्यविधा में पद्य रचना के क्रम में महाकाव्यकारों का उल्लेख कीजिए।

घ. नवीन भावों के आधार पर 20वीं शताब्दी में पद्य–गद्य और नाट्य की रचना विधा पर प्रकाश डालिए।

ड. विविध विषयगत रचनाओं का आधुनिक संस्कृत साहित्य की विकास यात्रा में क्या योगदान है? निरूपण कीजिए।

च. संस्कृत में अनूदिन कथा–साहित्य का परिचय दीजिए।

छ. प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी कि कृति उपाख्यानमालिका पर लेख लिखिए ।

प्र. 2 निम्नलिखित में से किन्हीं चार (04) की सन्दर्भ सहित व्याख्या लिखिए –

4×10=40

क.) प्रदीपहारावलिराजिता पुरी नवा वधूटीव दधेऽवगुण्ठनम्।
समुल्लसत्स्थासकचारुकल्पनैर्नखक्षतानि प्रकटं विरेजिरे ॥

ख.) प्रफुल्लपद्मस्थमधुव्रताक्षी मनोज्ञचारुस्मितशोभिवक्त्रा।
सुरालयस्था बलिदीपिकेव प्रभोर्ध्वचक्रं परितः किरन्ती ॥

ग.) यस्याः सौधसुवर्णगोपुरमणिर्धम्मिल्लचूडामणिः

सामोदामलपुष्पकीर्णसुपथाः सौभाग्यमुक्तास्रजः।

कासारोऽब्जपरागवारिविमलः सच्चित्रहेमांशुकम्

सा कुर्खीति पुरा बभूव नगरी लावण्यभूर्मालवे ॥

घ) ज्ञात्वा तद्गतिमादिदेश मतिमान् हेयास्त्वया नास्तिकाः

प्रह्लादः पितरं बलिः कुलगुरुं गोप्यः पतीनात्मनः।

कैकयीं भरतो दशाननमपि ज्येठाग्रजंसोदरो

व्याचिक्षेप निराचकार मुमुचुस्तत्याज दूराञ्जहौ।।

ड.) शुश्रूषा कथमम्ब पत्युरिह मे कार्या सुते श्रद्धया

किं तातस्य यथा करोषि विधिना तद्वद्विधेया त्वया।

किं हि स्याद्यदि सेव्यते प्रतिदिनं प्रीतः स ते जायते

कान्तं चेन्न जहामि तद्भवति किं न त्वामसौहास्यति।।